राजभवन देहरादून में आयुर्वेद एवं मर्म चिकित्सा पर आयोजित सेमीनार में माननीय राज्यपाल महोदय का संबोधन

(17 नवम्बर 2022)

जय हिन्द !

आयुर्वेद एवं मर्म चिकित्सा के इस सेमिनार में उपस्थित कुलपति गण, सचिव, अधिकारी, प्राध्यापक, छात्र–छात्राएं और उपस्थित महानुभावों!

आज के इस सेमिनार में आप सब के बीच उपस्थित होकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।

इस आयोजन के लिए आयुष एवं आयुष शिक्षा विभाग के अधिकारियों एवं आयुर्वेद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुनील कुमार जोशी जी और सहयोगी प्रत्येक सदस्य को इस सुन्दर आयोजन के लिए मैं हार्दिक बधाई देता हूँ ।

आज राजभवन में हम आजादी के अमृत महोत्सव में **'हर दिन, हर घर आयुर्वेद'** अभियान के साथ **'आयुर्वेद अमृतानाम्'** और **'मर्म चिकित्सा की उपादेयता'** विषय पर एक समझ विकसित करने के साथ–साथ योग, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा के लिए एक भागीदारी, **एक मिशन और एक विज़न के लिएएकत्रित हुए हैं।**

योग, आयुर्वेद, मर्म जैसी भारतीय चिकित्सा पद्धतियां हमारे ऋषि–मुनियों की अनमोल धरोहर हैं।

हजारों वर्षों के बाद भी ज्ञान हम सब के लिए उतना ही उपयोगी बना हुआ है।

भारत की इस ज्ञान परंपरा को जीवंत बनाए रखने के लिए जो आज भी प्रयत्नशील हैं ऐसे महानुभावों को मैं दिल की गहराई से शुभकामनाएं अर्पित करता हूँ।

आज चिकित्सा विज्ञान एक नयी ऊँचाई पर है, दुनिया में नित नये–नये आविष्कार हो रहे हैं, लेकिन नयी–नयी बीमारियां भी प्रकट होती जा रही हैं। नये–नये चैलेंज सामने आते जा रहे हैं।

कोराना महामारी ने तो पूरी दुनियां को गहरे संकट में डाल दिया था, जब आज की चिकित्सा पद्धतियां कोरोना के निदान के लिए तत्काल कोई समाधान नहीं खोज पाईं थी तब योग, और आयुर्वेद ने एक राह दिखाई और भय के वातावरण में एक सहारा दिया।

हमे यह समझना होगा कि हमारे पूर्वजों का ज्ञान किसी भी स्तर पर कमतर नहीं है।

हमें इस बात पर गर्व होना चाहिए कि हमारे देश ने हर क्षेत्र में दुनिया को बहुत गहरे विचार और वैज्ञानिक आविष्कार दिये हैं। योग, आयुर्वेद, मर्म चिकित्सा, प्राकृतिक चिकित्सा जैसी भारतीय चिकित्सा पद्धतियां हमारी अनोखी धरोहरें हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी हमारी इन प्राचीन धरोहरों के प्रति हमें जागरूक कर रहे हैं।

उनके नेतृत्व में हम हर ओर विकास की एक नयी दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

15 अगस्त को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लाल किले की प्राचीर से हमें विकसित भारत का लक्ष्य दिया है।

हमें **'विकसित भारत'** का लक्ष्य प्राप्त करना है। विकास की एक नयी कहानी लिखनी है।

इसके लिए हमें सबसे पहले गुलामी की मानसिकता से बाहर आना होगा। हमारी विरासत पर गर्व करना होगा।

योग, आयुर्वेद, मर्म जैसी पद्धतियां हमारी प्राचीन विरासतें हैं हमें अपनी इस विरासतों पर गर्व करना होगा। इन्हें जीवन का आधार बनाना होगा। इससे हम देश को स्वस्थ और मजबूत बनने में सक्षम होंगे।

राज्यपाल बनने के समय ही मैंने यह तय कर लिया था कि उत्तराखण्ड की समृद्धि के लिए राह खोजनी है ।

कुछ दिन पहले ही हमारी सरकार ने उत्तराखण्ड में **'प्राकृतिक कृषि पद्धति'** को लागू करने के लिए योजनाएं शुरू की हैं।

और आज आयुर्वेद और मर्म पर आधारित यह आयोजन भी उसी दिशा में एक कदम है जो उत्तराखण्ड को स्वस्थ और समृद्धि की राह पर आगे ले जा सकता है।

मेरा मानना है कि उत्तराखण्ड की इस भूमि पर योग, आयुर्वेद, मर्म न केवल उत्तराखण्ड को अपितु पूरे देश और विदेशों से आने वाले लोगों को स्वस्थ और सुखी बना सकता है।

देवभूमि उत्तराखण्ड को प्रकृति ने अनोखा वरदान दिया है। यहां की हवा, यहां का पानी, यहां के फल और यहां की हर वनस्पति सब बहुत ही पवित्र और दिव्य हैं।

योग, आयुर्वेद, मर्म, प्रकृति चिकित्सा की राजधानी बनाने के लिए हमें बड़े कदम उठाने होंगे।

योग, आयुर्वेद, मर्म चिकित्सा के प्रचार–प्रसार के लिए हमें अपनी सारी ऊर्जा इस दिशा में लगानी होगी। उत्तराखण्ड को व्यक्तित्व निर्माण का केन्द्र बनाना होगा ।

उत्तराखण्ड के गांव–गांव में होमस्टे के साथ–साथ वैलनेस सेंटर खोलने होंगे।

पर्यटन, तीर्थाटन, मनोरंजन, अध्यात्म, योग, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा के साथ वैलनेस का एक मिला–जुला प्रतिरूप तैयार कर उत्तराखण्ड की आर्थिक प्रगति और समृद्धि की राह बनानी होगी ।

इस दिशा में राज्य के विश्वविद्यालय, औद्योगिक घराने, कार्पोरेट सैक्टर, स्टार्टअप्स, स्वउद्यमी युवाओं की सोच–विचार धारणा के अनुसार एक समेकित माड्यूल विकसित करना होगा।

हमें अपने कौशल आधारित रोजगार पाठ्यक्रमों, विजनेस मॉड्यूल्स और सरकारी नीतियों में इस प्रारूप को विकसित करना होगा।

यह हमारे प्रदेश के लिए आर्थिक समृद्धि, प्रकृति और पर्यावरण की सुरक्षा के साथ पलायन को रोकने और उत्तराखण्डकी लोक संस्कृति और स्थानीयता की रक्षा के लिए भी वरदान बन सकता है।

योग, आयुर्वेद, मर्म चिकित्सा का संदेश सभी स्तरों तक फैले इस दिशा में हमें गंभीरता पूर्वक विचार करने होंगे।

'हर दिन हर घर आयुर्वेद' की केन्द्र सरकार की मुहिम के सहभागी बनें। उसे अपनाएं। **'समग्र स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद'** के बारे में जागरूकता पैदा करें।

आज के इस आयोजन में **'मर्म चिकित्सा की उपादेयता'** पर प्रो० सुनील कुमार जोशी जी को और **'आयुर्वेद अमृतानाम्'** पर व्याख्यान देने के लिए जामनगर, गुजरात से पधारे **वैद्य हितेन वाजा जी** को प्रभावपूर्ण व्याख्यान के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

आप दोनों महानुभावों का कार्य और उसके अनुरूप यहां प्रस्तुत व्याख्यान हमारी धरोहर को संजीवनी प्रदान करने वाला है। यहां उपस्थित आप सब महानुभावों ने इस सेमिनार को गंभीरता से सुना, मैं आप सभी को भी इस आयोजन के सहभागी बनने के लिए हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ।

मुझे आशा है कि आप सभी अपने–अपने स्तर पर योग, आयुर्वेद, मर्म चिकित्सा के उत्कर्ष के लिए कार्य करेंगे।

जय हिन्द!